



Original Article

इक्कीसवीं शती की हिंदी फिल्मों में चित्रित किन्नर जीवन का समस्यामूलक अध्ययन

प्रा. मोहसीन मुबारक बागवान

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड

Manuscript ID:

IJAAR-C130325

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 120 - 127

Submitted: 19 Jan.2026

Revised: 30 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. मोहसीन मुबारक बागवान

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785657

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785657>



Creative Commons



सार:

यह शोध पत्र हिंदी साहित्य किन्नर विमर्श के समान हिंदी फिल्म के मध्यान से चित्रित किन्नर जीवन की समस्याओं की तलाश करता है। इक्कीसवीं शती की हिंदी फिल्मों में किन्नर समुदाय का चित्रण पूर्ववर्ती दशकों की तुलना में अधिक संवेदनशील, यथार्थपरक और मानवीय दृष्टिकोण से किया गया है। जहाँ पहले किन्नर पात्रों को हास्य, भय या हाशिए के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया जाता था, वहीं नई शती में उन्हें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और अस्तित्वगत संघर्षों के साथ एक पूर्ण मानवीय व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया जाने लगा है। यह शोध पत्र इक्कीसवीं शती की प्रमुख हिंदी फिल्म जैसे तमन्ना, दरमियान, शबनम मौसी, वेलकम टू सज्जनपुर, क्वीन्स! डेस्टिनी ऑफ़ डांस, लक्ष्मी बॉम्ब, चंडीगढ़ करे आशिकी, हड्डी आदि के माध्यम से किन्नर जीवन के पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक आयामों का समस्यामूलक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: हिंदी फिल्म, भारतीय समाज, किन्नर समुदाय, बीसवीं शती की हिंदी फिल्म, इक्कीसवीं शती की हिंदी फिल्म, किन्नर जीवन, समस्याएं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. मोहसीन मुबारक बागवान. (2026). इक्कीसवीं शती की हिंदी फिल्मों में चित्रित किन्नर जीवन का समस्यामूलक अध्ययन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 120 - 127. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785657>

प्रस्तावना:

साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है। हिंदी साहित्य ने विभिन्न परिस्थितियों के परिपेक्ष में मनुष्य एवं समाज को तर्क, विचार, ज्ञान एवं संभावना आदि से अवगत किया है। साथ ही इसमें समस्याओं का निरूपण भी किया है। जिससे समाज में

जागरूकता का निर्माण किया जाए तथा सामाजिकों की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया जाए। इसी समान हिंदी फिल्म में भी समाज का चित्रण होता रहा है। इसके माध्यम से समाज को विशेष संदेश अवधारणा एवं विचारों से अवगत होने में लोगों को सहायता मिली है। समाज के दबे कुचले तबको,



उपेक्षित वर्गों के सवाल हिंदी फिल्मों के माध्यम से उठाए गए प्रतीत हुए हैं। वास्तव में हिंदी फिल्मों का भारतीय समाज से काफी गहरा एवं निकटतम नाता है। जिसका सीधा असर भारतीयों के जीवन पर दृष्टिगत हुआ है। सन 1930 के उपरांत साहित्य के अतिरिक्त भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं में सिनेमा एवं फिल्मों के माध्यम से भी सामाजिक स्थितियों एवं समस्याओं का चित्रण आरंभ हुआ। हिंदी साहित्य में जो नए विचार प्रवाह, आरंभ हुए ठीक उसका प्रभाव हिंदी फिल्म पर दिखाई दिया। सन 1960 के बाद नारी विमर्श, दलित विमर्श, मुस्लिम विमर्श, आदिवासी विमर्श महत्वपूर्ण रहे हैं। जिस तरह से इन पिछड़े दबे कुचले तबकों के जीवन से जुड़ी बातों पर गहराई से चिंतन हिंदी साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। ठीक उसी तरह हिंदी फिल्मों में भी उन्हें चित्रित करते हुए इन तबकों की वास्तविक सामाजिक स्थितियों को मानवीय दृष्टि से देखते हुए उनका अस्तित्व, अस्मिता, मानवीय अधिकार आदि के केंद्र में प्रमुख रूप से चित्र प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान में हाशिए पर पड़े किन्नर समुदाय पर भी साहित्य एवं हिंदी फिल्मों के माध्यम से प्रकाश डाला गया मालूम होता है।

मानव समाज में मनुष्य के स्त्री और पुरुष आदि दो ही रूपों को मान्यता दी जाती है किंतु इसके अतिरिक्त स्त्री और पुरुष के समन्वित रूप को समाज आज भी अमान्य करते हुए विकृत मनुष्य का विकृत रूप मानता है। अर्थात् उन्हें हिजड़ा एवं किन्नर कहकर संबोधित करता है। आज भी उन्हें सामाजिक स्थान प्राप्त नहीं है। आज उन्हें मुख्य प्रवाह में लाना आवश्यक है। वास्तव में वे मानवीय रूप ही हैं, किंतु उन्हें उपहासात्मक एवं निम्न दृष्टि से देखा जाता रहा है। किन्नर समुदाय की भावनाएं, उनके जीवन की समस्याएं, जीवन की वास्तविक स्थिति, गति आदि प्रति समाज संवेदनशील नहीं है। यह विषय मनुष्यता की दृष्टि से अत्यंत चिंतनीय है। किंतु हिंदी साहित्य में डॉ. फिरोज खान ने इस विषय की ओर ध्यानाकर्षित करते हुए किन्नर साहित्यिक विमर्श को बढ़ावा दिया किंतु बीसवीं शती

में किन्नर समुदाय को हिंदी फिल्मों में फुटकर रूप से प्रस्तुत किया गया है वह निम्न रूप से है।

उद्देश्य:

1. इक्कीसवीं शती की हिंदी फिल्मों में किन्नर जीवन के चित्रण का गहराई से निरीक्षण करना।
2. किन्नर पात्रों के माध्यम से उनके जीवन की विभिन्न समस्याओं की पहचान करना तथा उन्हें स्पष्ट करना।
3. रूढ़ छवि से यथार्थवादी प्रस्तुति तक के परिवर्तन का अध्ययन करना।
4. किन्नर विमर्श में हिंदी फिल्मों की भूमिका एवं योगदान देखना।

बीसवीं शती की फिल्मों में किन्नरों का चित्रण:

सन 1950 से सन 2000 तक के दौर के हिंदी फिल्मों में किन्नरों का चित्रण फुटकर एवं सिमित रूप में हुआ है। प्रारंभ में मनोरंजन की दृष्टि से हास्य उत्पन्न करने के लिए किन्नरों के दृश्य आयोजित किए जाते थे। साथ ही नाच गाने में सहयोगी कलाकार के रूप में पात्र आयोजन होता रहता था। कभी कभार अशुभ रहस्यात्मक तरीके भी चित्रण किया गया। 1974 में आई 'कुंवारा बाप' फिल्म में किन्नरों को प्रथमतः संवेदनात्मक रूप में ही दिखाया गया था। 1977 में रिलीज अमर अकबर एंथनी फिल्म में परंपरागत एवं रूढ़ रूप में ही अर्थात् आशीर्वाद देने एवं गाने बजाने तक ही किन्नरों को चित्रित किया गया। सन 1991 में आई फिल्म 'सड़क' में किन्नर चित्रण रूढ़ के अवरुद्ध नए स्वरूप में प्रस्तुत किया। इसमें सदाशिव अमरापुरकर 'महारानी' की भूमिका में नजर आए, जो अत्यंत भयावह खलनायक किन्नर के रूप में प्रदर्शित हुए। इस भूमिका से किन्नरों प्रति भय की अस्थापना लोगों में हुई। यहां किन्नर सेक्स वर्कर एवं खलनायक तथा नकारात्मक रूप में दृष्टिगत हुआ। जिस से समाज में किन्नरों प्रति गलत विचार उत्पन्न हुए। 1997



में आयी महेश भट्ट कृत 'तमन्ना' फिल्म में परेश रावल प्रमुख टिकू नामक किन्नर के किरदार के रूप में प्रतीत हुए। यहां यह किरदार काफी संवेदनशील रूप में दिखाया गया। मिली हुई एक छोटी बच्ची को पाल पोसकर बड़ा करने तथा उसे अच्छी शिक्षा एवं संस्कार देने वाले प्रमुख जिम्मेदार किन्नर का किरदार इस फिल्म में दिखाया गया है। यहां लिंग प्रधानता को वरीयता न देते हुए संवेदनशील, करुणा, विश्वास, प्रेम, त्याग का निरूपण किन्नर पात्र में किया गया था। इस फिल्म से हिंदी फिल्म में किन्नर चित्रण की दिशा परिवर्तित हुई। इसके बाद सन 1997 में प्रस्तुत 'दरमियान' ही एकमात्र ऐसी फिल्म थी, जिसमें किन्नर जीवन की संवेदनाओं को एवं समस्याओं को वाणी दी गई थी। इसी फिल्म से बॉलीवुड में किन्नर केंद्रित फिल्मों का दौर शुरू हुआ। जिसमें किन्नर जीवन को गहराई से प्रस्तुत किया जाने लगा।

इक्कीसवीं शती की किन्नर केंद्रित प्रमुख हिंदी फिल्में:

इक्कीसवीं शती के तीसरे दशक तक बॉलीवुड हिंदी फिल्मों में पूर्ववत की तुलना में काफी मात्रा में किन्नर केंद्रित फिल्मों का निर्माण किया गया। जहां बीसवीं शती की हिंदी फिल्मों में किन्नर को रूढ़ एवं परंपरागत रूप में अर्थात् हास्य एवं मनोरंजन तथा नाच गाने के साथ साथ बधाई अवसर तथा सामाजिक अस्वीकृति और भयानक अवतार के रूप में चित्रित किया गया था, वहां अब वर्तमान समय में हाशिए पर पड़े किन्नर समाज को संवेदनात्मक और यथार्थ रूप में दिखाया जाने लगा। यह दौर तमन्ना एवं दरमियां आदि दो फिल्मों से काफी प्रभाव ग्रहण कर गया। क्योंकि बॉलीवुड हिंदी फिल्मों के इतिहास में फिल्म के कथा केंद्र में किन्नर का प्रधानता से चित्रण प्रथमता: वर्णित दो फिल्मों में ही दृष्टिगोचर होता है। इन दो फिल्मों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए किन्नर का नवीनतम रूप तथा उनके जीवन का चिंतन निम्न फिल्मों में किया गया।

सन 2005 में 'शबनम मौसी' इस फिल्म में किन्नर जीवन एवं किन्नर प्रति दृष्टि का नया आयाम प्रस्तुत किया। यह फिल्म भारत की पहली किन्नर विधायक शबनम मौसी के जीवन पर आधारित थी। सन 2008 में प्रदर्शित 'वेलकम टू सज्जनपुर' में ग्रामीण परिवेश में रविकिशन को किन्नर के रूप में हास्य एवं संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया। इसके बाद सन 2011 में 'क्वींस! डेस्टिनी ऑफ डांस' फिल्म का निर्माण किया गया, जिसमें किन्नरों का जीवन प्रधानता से दिखाते हुए उनके जीवन के वास्तविक संघर्ष को उजागर किया गया। इस फिल्म में किन्नर के आत्मसम्मान की भावना को केंद्र में रखा गया। सन 2014 में 'लक्ष्मी' नामक फिल्म में किन्नर और चाइल्ड ट्रैफिकिंग को प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया गया था। 2014 में आई डार्लिंग फिल्म में किन्नर चित्रण थ्रिलिंग के परिप्रेक्ष्य में किया गया। 2020 में 'लक्ष्मी बॉम्ब' यह फिल्म ट्रांसजेंडर की आत्मा की कथा हॉरर रूप में प्रस्तुत की गई थी। साथ ही किन्नर की एकाधिक समस्याओं को वाणी दी गई थी। यहां फिर किन्नर को भयावह रूप में प्रस्तुत किया गया, किंतु 2021 की 'चंडीगढ़ करे आशिकी में' ट्रांसविमेन के प्रेमसंबंध की प्रथम ही प्रस्तुति हुई। यह किन्नर विमर्श में नया आयाम प्रस्तुत हुआ, जो संवेदनात्मक है। नवाजुद्दीन सिद्दीकी की 2023 में प्रदर्शित 'हड्डी' फिल्म की भी काफी चर्चा हुई जिसमें किन्नर जीवन का संघर्ष एवं जीवनगत समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए विद्रोहात्मक एवं भयानक रूप का प्रस्तुतीकरण हुआ।

इक्कीसवीं शती की हिंदी फिल्मों में चित्रित किन्नरों की प्रमुख समस्याएं:

हिंदी फिल्मों के बीसवीं शती के अंत तक किन्नर समुदाय पर आधारित कोई विशेष प्रस्तुतीकरण नहीं किया गया किंतु सन 1997 से किन्नर आधारित फिल्मों का दौर शुरू हुआ, जिसमें किन्नर समुदाय एवं उनके जीवन का विमर्श आरंभ हुआ। इन फिल्मों में किन्नर के परंपरागत रूढ़ चित्रण के



अवरुद्ध यथार्थ परख अभिव्यक्ति हुई है। वर्णित फिल्मों के माध्यम से किन्नर समुदाय की कठिनाइयों को तथा समाज की कट्टर मानसिकता को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें किन्नर की व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक समस्याओं को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है।

पारिवारिक अस्वीकृति: भारतीय समाज में किन्नर स्वरूप जन्म लिए व्यक्ति को हीन एवं अपमानात्मक भावना से ही देखा गया है। मूल परिवार में सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा के खातिर किन्नर का स्वीकार नहीं किया जाता। उनसे बेतुका एवं अमानुष तथा अमानवीय व्यवहार करते हुए उन्हें पारिवारिक स्थान नहीं दिया जाता। वास्तव में किन्नर भी समाज का अंग होते हुए भी उन्हें मूलतः परिवार द्वारा भी ठुकराया जाता है। इसकी खुलकर अभिव्यक्ति हिंदी फिल्मों में हुई है।

‘तमन्ना’ फिल्म में परेश रावल प्रमुख किन्नर किरदार ‘टिक्कू’ के रूप में प्रतीत होते हैं। जिसे परिवार द्वारा ठुकराया गया है तथा वह मुंबई में रहते हुए ज़िंदगी बसर करता है।

‘दरमियां’ फिल्म में किरण खेर जीनत बेगम की भूमिका में है। जिसने उसकी संतान ‘इम्मी’ को जन्म दिया है। जिसके जन्म के बाद डॉक्टर से पता चलता है कि, ‘इम्मी’ न लड़का है न लड़की। जिससे जीनत बेगम काफी आहत होती है। जीनत बेगम फिल्मी दुनिया की जानी-मानी एक्ट्रेस थी। वह अपनी प्रतिष्ठा एवं ग्लैमर के कारण ‘इम्मी’ को अपनी संतान के रूप में पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं करती। उसे सामाजिक प्रतिष्ठा का भय रहता है। ‘इम्मी’ इस बात से काफी परेशान था, कि उसकी मां उसे स्वीकार नहीं करती। यहां इम्मी पारिवारिक अस्वीकृति का सामना करते हुए जीवन बिताता रहता है।

‘शबनम मौसी’ फिल्म में शबनम का जन्म एक धनिक परिवार में होता है। यहां इस परिवार में शबनम को प्यार-दुलार मिलता है किंतु कुछ अरसे के बाद शबनम के साथ सामाजिक बेतुका व्यवहार होने से वह घर छोड़ने पर

मजबूर हो जाता है और वह किन्नर के गुटों में जाकर रहना शुरू कर देता है। यहां से वह अकेला ही पड़ जाता है। ‘वेलकम टू सज्जनपुर’ इस फिल्म में किन्नर के रूप में चित्रित मुन्नीबाई परिवार की ओर से पूर्ण रूप से स्वीकृत नहीं है। ‘क्वींस डेस्टिनी ऑफ डांस’ में चित्रित किन्नर को पारिवारिक एवं सामाजिक अस्वीकृति मिलने से वह शहर चलता है और समाज के तंज और डिस्क्रिमिनेशन का शिकार होता है। लक्ष्मी एवं लक्ष्मी बॉम्ब, आदि दो फिल्मों में भी पारिवारिक अस्वीकृति का सामना किन्नर पात्रों ने किया है। सन 2023 में आई ‘हड्डी’ फिल्म में हरिया उर्फ हड्डी किन्नर की भूमिका में चित्रित है। जिसे सामाजिक स्वीकृति न मिलने से वह गृह त्याग कर देता है। इसके बाद वह दिल्ली चला आता है और किन्नर समुदाय में जीवन बिताना आरंभ करता है।

अर्थात् वर्णित फिल्मों में किन्नर को सामाजिक भय एवं प्रतिष्ठा के कारण परिवार द्वारा स्वीकार न किए जाने का यथार्थपरख चित्रण हुआ है। जो मानवता एवं संवेदनशीलता पर प्रश्न उपस्थित करता है तथा इसके माध्यम से समाज का भयानक सत्य उजागर किया गया है।

सामाजिक अस्वीकृति: प्रायः देखा गया है कि, किन्नर को समाज में हीन एवं अपमानजनक भाव से देखा जाता है। समाज उन्हें मानव रूप में स्वीकार करने से कतराता है। उनकी गुणात्मकता, टैलेंट, काबिलियत को अस्वीकार किया जाता है। अर्थात् किन्नर को किसी भी परिस्थिति में सामाजिक स्थान नहीं दिया जाता, जिसके वह हकदार हैं। इसकी खुलकर अभिव्यक्ति बीसवीं शती के अंत की एवं इक्कीसवीं शती की फिल्मों में हुई है।

‘तमन्ना’ फिल्म में चित्रित किन्नर टिक्कू कूड़ेदान में मिली हुई तमन्ना नामक लड़की को पाल-पोसकर बड़ा करता है तथा उसे सुसंस्कृत करता है, पढ़ाता लिखाता है किंतु समाज किन्नर के मानवीय उच्चतम गुणों को नजरअंदाज करते हुए उसे स्वीकार नहीं करता। तमन्ना बड़ी होने पर अपने सगे पिता का



पता लगाकर उनसे रिश्ता जोड़ना चाहती है किंतु तमन्ना से जुड़े हुए टिक्कू के नाम के कारण तमन्ना के पिता उसे स्वीकार नहीं करते। उन्हें अपनी प्रतिष्ठा का भय अटकाव उत्पन्न करता है।

‘दरमियां’ फिल्म में जीनत बेगम अपने संतान इम्मी के किन्नर होने से सामाजिक भय के कारण संतान के रूप में पूर्ण रूप से स्वीकार करने से बचती है। सामाजिक प्रतिष्ठा के चलते वह अपनी संतान इम्मी को बोझ स्वरूप समझते हुए बेतुका व्यवहार करती है। ‘शबनम मौसी’ फिल्म में शबनम परिवार द्वारा स्वीकृत हो जाने के बाद भी समाज उसे पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं करता। वास्तव में शबनम सामाजिक भेदभाव एवं भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करते हुए विधायक होने के लिए संघर्ष करता है, किंतु समाज इसे गंभीरता से नहीं लेता। राजनीतिक क्षेत्र में उसे अपनी जड़ें जमाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। आगे चलकर वह लोगों के लिए मार्ग बनाता है और विधायक भी हो जाता है, किंतु शबनम को सामाजिक तिरस्कार एवं सामाजिक हास्य का सामना करना पड़ता है। ‘वेलकम टू सज्जनपुर’ में भी मुन्नी बाई पंचायत का चुनाव लड़ने के लिए राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करती है किंतु उसे समाज अस्वीकार करता है। उसके विचार एवं भूमिका एवं भावनाओं का सम्मान न करते हुए उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता। ‘क्वींस डेस्टिनी ऑफ डांस’ में किन्नर एक नृत्य कलाकार के रूप में चित्रित हुआ है। परिवार द्वारा अस्वीकृति मिलने पश्चात वह शहर आता है। उसमें टैलेंट की कोई भी कमी नहीं है। वह लेडी नर्तकी के समकक्ष ही गुणों से मंडित है। प्रथमतः वह लेडी नृतिका का भी उससे ज्यादा निकटता स्थापित नहीं करती। समाज किन्नर के टैलेंट को दरकिनार करते हुए उसे प्रतिष्ठित कलाकार होते हुए भी किन्नर होने के कारण सामाजिक स्वीकृति एवं स्थान नहीं देता।

‘लक्ष्मी बॉम्ब’ इस फिल्म में अक्षय कुमार आसिफ नामक पात्र के रूप में प्रस्तुत हुआ है। जिसमें लक्ष्मी नामक किन्नर की आत्मा आसिफ के शरीर में प्रवेश करती है। वास्तव

में आसिफ रश्मि नामक लड़की से प्रेम करता रहता है किंतु समय बीत जाने पर आसिफ में स्थित किन्नर आत्मा क्रियाशील होने पर वह किन्नर सामान व्यवहार करने लगता है। जिससे रश्मि के माता-पिता आसिफ को अस्वीकार करते हुए रिश्ते को नकार देते हैं।

चंडीगढ़ करे आशिकी’ में जुंबा डांसर मानवी ब्राए एक ट्रांसजेंडर वूमेन होने का पता एक रात अपने बॉय फ्रेंड मनु मुंजाल को लगने पश्चात वह उससे दूरी बना लेता है, तथा सच्चे प्रेम को ठुकराता है। उसके मित्र एवं सामाजिक उस पर हंसते रहते हैं। इसी हास्य एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के भय के कारण वह मानवी से दूरी बनाता है।

‘हड्डी’ फिल्म में हरिया उर्फ हड्डी को पारिवारिक अस्वीकृति के बाद सामाजिक अस्वीकृति का सामना करना पड़ता है। परिवार इज्जत एवं प्रतिष्ठा के डर से अपने बच्चों को स्वीकार करने से डरता है तथा हड्डी को घर से निकाल देता है।

उपेक्षा एवं उपहास: भारतीय समाज में किन्नर उपेक्षित ही रहा है। किन्नर को समाज में स्थान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं है। वास्तव में वे भी अन्य लिंग धारी के समान समाज में प्रतिष्ठा एवं स्थान के हकदार है। फिर भी वह उपेक्षित रह जाते हैं, इसका चित्रण इक्कीसवीं शती की किन्नर केंद्रित फिल्मों में प्रमुखता से हुआ है। इससे पहले भी किन्नर को फिल्मों में रूढ़ एवं उपेक्षित रूप में ही चित्रित किया गया था। तमन्ना, दरमियां, शबनम मौसी, वेलकम टू सज्जनपुर, क्वींस डेस्टिनी ऑफ डांस, लक्ष्मी, लक्ष्मी बॉम्ब, एवं हड्डी फिल्मों में चित्रित किन्नर पात्रों को सामाजिक उपेक्षा एवं उपहास का शिकार होते हुए देखा गया है। उनके सम्मुख पारिवारिक सामाजिक गुणात्मक उपेक्षा के गहरे संकट उपस्थित हुए प्रतीत होते हैं। वह अपने पहचान एवं अस्तित्व को लेकर संघर्ष करते दृष्टिगत हुए हैं। जिससे उनके जीवन में तन्हाई, घुटन, आत्माकलेश एवं आत्मसंघर्ष की ध्वनि सुनाई पड़ती है। समाज उन्हें मानव रूप न मानते हुए उनके स्थान एवं अस्तित्व को अस्वीकार करते हुए उनकी अपेक्षा एवं



उपहास करता है। वह हर जगह हंसी के पात्र बन जाते हैं यह विषय मानवता के दृष्टिकोण से अत्यंत चिंताजनक है, जिसकी अभिव्यक्ति वर्तमान फिल्मों में प्रखरता से हुई है।

आजीविका एवं आर्थिक समस्या: भूतकालिक हिंदी फिल्मों में नाच- गाना, भीख मांगने, बधाई, देह व्यापार, आदि पर ही किन्नर की आर्थिक निर्भरता देखी गई है। इक्कीसवीं शती की फिल्मों में भी किन्नर को सक्षम आजीविका के सक्षम प्रतिष्ठित साधन प्राप्त न होने से उन्हें परंपरागत कार्यों को करते हुए देखा गया है। साथ ही उन्हें जीविका उपार्जन एवं अर्थार्जन के लिए कोई विशेष प्रावधान नहीं मिला है। शिक्षा एवं नौकरी के क्षेत्र में उन्हें लिंग विकृति के कारण किसी प्रकार के मौके नहीं दिए जाते और न ही जमाना इनकी काबिलियत एवं गुणात्मकता को गंभीरता से लेता है। इसका चित्रण वर्तमान फिल्मों में देखा गया है, जो समाज का भयावह यथार्थ है। तमन्ना फिल्म में टिक्कू परंपरागत कार्य के माध्यम से अर्थार्जन करता देखा गया है। दरमियां फिल्म में इम्मी परिवार द्वारा ठुकराहट के कारण अकेला पड़ जाता है और उसके सामने आर्थिक संकट खड़ा होता है। इसके बाद गृहत्याग करने पर इम्मी एकाधिक आर्थिक संकटों का सामना करता देखा गया है। शबनम मौसी में शबनम को परिवार द्वारा किन्नर समुदाय के पास भेजा जाता है। उसे शिक्षा का कोई अधिकार भी नहीं दिया जाता। जिसके कारण वह पढ़ लिखकर काबिल न बनने से अर्थार्जन एवं जीविका उपार्जन के लिए परंपरागत संगीत नृत्य सीखता है, जिससे उसकी जिंदगी चल सके। ठीक इसी तरह वेलकम टू सज्जनपुर इस फिल्म में मुन्नीबाई को रोजगार का सीमित अवसर ही प्राप्त होता है। उसे रोजगार की कमी से लड़ता देखा गया है। उसे आर्थिक स्वतंत्रता नहीं है। वह केवल बधाई मांगने तक ही सीमित रह जाता है। क्वींस डेस्टिनी ऑफ डांस में चित्रित ट्रांसजेंडर लेडी को टैलेंट होकर भी कोई वरीयता नहीं देता। वह एक समय ऑडिशन के लिए जाती है, तो वहां इसकी गुणात्मकता न देखते हुए किन्नर होने से ऑडिशन को लेकर

बहस होती है। जिससे उसे रोजगार के लिए जिद्दोजहद करना पाया गया है।

हिंसा एवं असुरक्षा तथा शोषण: सदियों से हाशिए पर पड़ा किन्नर समुदाय जिसे परिवार एवं समाज स्वीकार नहीं करता। ऐसी स्थिति में वह बेसहारा हो जाता है। इसी कारण अक्सर इन्हें हिंसा एवं असुरक्षा तथा शोषण का शिकार होना पड़ता है। आर्थिक उत्पीड़न एवं शोषण एवं पुलिस का अत्याचार सहना पड़ता है। इक्कीसवीं शती की हिंदी फिल्मों में किन्नर की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, हिंसा को प्रधान रूप से प्रस्तुत किया गया है। तमन्ना में टिक्कू में उच्च मानवीय गुण से युक्त होने के बाद भी उसे समाज स्वीकार नहीं करता बल्कि उसकी मानसिक हिंसा करता है। दरमियां में सामाजिक प्रतिष्ठा के भय के कारण जीनत बेगम संतान की प्रताड़ना करते हुए मानसिक हिंसा करती है। शबनम मौसी में शबनम को किन्नर समुदाय में भेज दिया जाता है जिससे उसके सामाजिक एवं मानसिक हिंसा हो जाती है तथा समाज एवं राजनीतिक क्षेत्र में उसकी प्रताड़ना हो जाती है। वेलकम टू सज्जनपुर की मुन्नीबाई राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करना चाहती है किंतु समाज उसे अस्वीकार करते हुए गंभीरता से नहीं लेता और उसे प्रताड़ना झेलने पड़ती है। क्वींस डेस्टिनी ऑफ डांस की किन्नर डांसर से निकटता स्थापित करने में लोक कतराते हैं तथा ऑडिशन में उसकी वास्तविक पहचान के कारण बहस हो जाती है जिससे वह किन्नर अंदर से टूट जाता है। इसी तरह चंडीगढ़ कर आशिकी में मानवी ब्रार की असली पहचान का पता जब मनुं मुंजाल को लग जाता है, तो वह अपने प्रेम संबंध को तोड़ते हुए मानवी के सच्चे प्रेम को ठुकरा देता है, जिससे मानवी को काफी ठेस पहुंचती है। यहां मानवी की मानसिक हिंसा एवं असुरक्षितता प्रतीत होती है। इन फिल्मों में किन्नर समुदाय की भावनिक एवं मानसिक हिंसा प्रतीत हुई है। ट्रेफिक सिग्नल फिल्म में किन्नर पात्रों के माध्यम से महानगरों में उनकी असुरक्षित और शोषित स्थिति को दिखाया गया है। लक्ष्मी में ट्रांसजेंडर व्यक्ति के साथ हुए अन्याय



और हिंसा की पृष्ठभूमि को दर्शाया गया है। जिसमें लक्ष्मी नामक किन्नर की हत्या कर दी जाती है तथा इसके परिवार को भी मार दिया जाता है। इस फिल्म में फ्लैशबैक शैली में किन्नर पात्र को दिखाया गया है। साथ ही हड्डी में किन्नर के परिवार की हत्या कर दी जाती है। साथ ही हरि को सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ता है। वह सामाजिक प्रताड़ना का भी शिकार हो जाता है जिसके कारण वह पैतृक गांव त्याग कर दिल्ली एनसीआर आ जाता है। अर्थात् किन्नर के लिए सार्वजनिक और निजी दोनों ही स्थान सुरक्षित नहीं हैं।

पहचान का संकट: बीसवीं शती के अंत में प्रदर्शित फिल्मों तमन्ना, दरमियां आदि दो फिल्मों में प्रथम ही किन्नर का गहराई से जीवन चित्रण किया गया है। जिसमें उनकी पहचान का संकट प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है। जिसमें किन्नर समुदाय का आत्मस्वीकृति एवं सामाजिक पहचान एवं स्थान आदि को लिए किन्नर और समाज के बीच का संघर्ष उजागर किया गया है। अपनी वास्तविक पहचान को लेकर आत्मसंघर्ष करता हुआ किन्नर समुदाय इन फिल्मों के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। वास्तविक रूप में इक्कीस्वीं शती में विचरण कर रहे हो, ज्ञान विज्ञान के द्वार खुल गए हो किंतु समाज की रूढ़ मानसिकता किन्नर समुदाय को अस्वीकार करती है। समाज में रहते हुए अपनी पहचान का संकट किन्नरों को हमेशा खाए रहता है। जिससे समाज उन्हें दरकिनार करते हुए सामाजिक स्थान नहीं देता। वर्णित तमन्ना, दरमियां, शबनम मौसी, वेलकम टू सज्जनपुर, क्वींस डेस्टिनी ऑफ डांस, लक्ष्मी, लक्ष्मी बॉम्ब, चंडीगढ़ करे आशिकी, हड्डी आदि फिल्मों में किन्नर की सामाजिक पहचान का संकट प्रखरता से दिखाया है। जो यथार्थ को प्रस्तुत करती है। इन फिल्मों में चित्रित किन्नर पात्रों को पहचान के संकट से जूझते हुए देखा गया है। सुप्रीम कोर्ट के सन 2014 के नालसा एक्ट के निर्देशों के बावजूद भी आज शिक्षित समाज के बीच भी किन्नर अपनी पहचान के संकट से परेशान है।

शिक्षागत असुविधा: भारतीय समाज में किन्नर को परिवार और समाज द्वारा ठुकराए जाने पर वह मुख्य शैक्षिक प्रवाह में नहीं आ पाए। अतः वह किन्नर समुदायों में जाकर ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इक्कीसवीं शती की फिल्मों में किन्नर पात्र टिककू, इम्मी, शबनम लक्ष्मी, मुन्नीबाई, मानवी, हरि एवं हड्डी को इस समस्या से जूझते हुए देखा गया है। जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें अच्छी शिक्षा एवं नौकरी का अवसर प्राप्त नहीं होता। तमिल की हिट फिल्म सुपर डीलक्स में किन्नर पात्र शिक्षा से वंचित रहने पर शिक्षा के माध्यम से उसके लिए रोजगार के अवसर अपने आप खत्म हो जाते हैं और उसे जिंदगी भर आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। जिसके परिणाम स्वरूप वह देह व्यापार से शब्द हो जाता है। शिक्षागत और सुविधा के कारण किन्नर परंपरागत कार्यों को चुनते हैं तथा आर्थिक विवशता के कारण देह व्यापार में जुट जाते हैं यह एक गंभीर समस्या है।

राजनीतिक उपेक्षा: भारतीय समाज में पारिवारिक एवं सामाजिक स्वीकृति के उपरांत किन्नर समुदाय को अन्य क्षेत्रों से भी बेदखल करते हुए देखा गया है। सामाजिक भेद की भावना इसका प्रमुख कारण है। वास्तव में समाज किन्नर का अस्तित्व ही स्वीकारने को तैयार नहीं है। जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में संकटों का सामना करते हुए संघर्ष में जीवन बिताना पड़ता है।

शबनम मौसी में चित्रित शबनम भी आरंभ में भ्रष्ट शासन प्रशासन में बदलाव करने की भावना से राजनीतिक क्षेत्र में हिस्सा लेता है, किंतु आरंभ में उसे सामाजिक उपेक्षा एवं बहिष्कार का सामना करना पड़ता है। वेलकम टू सज्जनपुर में चित्रित किन्नर पात्र मुन्नीबाई पंचायत का चुनाव लड़ना चाहती है किंतु समाज उसे वरीयता न देते हुए गंभीरता से नहीं लेता। अतः राजनीतिक क्षेत्र में उसका स्वीकार नहीं किया जाता। सन 2023 में आई फिल्म हड्डी में भी हरि उर्फ हड्डी को सामाजिक प्रताड़ना एवं बहिष्कार का सामना करना पड़ता है।



और राजनीतिक क्षेत्र में पावरफुल नेता से जुड़े होने के बाद भी उसे स्वीकृत नहीं किया जाता। वास्तविक रूप में किन्नर भी भारतीय समाज का एक हिस्सा है किंतु उनके मानवीय रूप, काबिलियत को दरकिनार करते हुए रूढ़ मानसिकता से वर्तमान समय में भी उन्हें अन्य क्षेत्र के समान राजनीतिक क्षेत्र से भी उपेक्षित रहना पड़ रहा है।

हिंदी साहित्य के समकक्ष हिंदी फिल्म एवं सिनेमा क्षेत्र ने भी समाज के उपेक्षित किन्नर समुदाय का चित्रण प्रमुखता से करते हुए किन्नर समुदाय का दुख एवं दर्द भरा जीवन उसमे व्याप्त भयानक एवं भयंकर स्थिति को लोगों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। तथा उनके दर्दनाक जीवन की वास्तविकता, आत्मसंघर्ष, पारिवारिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक समस्याओं का चित्रण यथार्थ रूप में किया है, जो सामाजिकों को सोचने पर बाध्य करता है। अतः हिंदी फिल्म क्षेत्र का योगदान इस दिशा में अत्यंत सराहनीय है।

संदर्भ:

1. तमन्ना (1997)
2. दरमियान (1997)
3. शबनम मौसी (2005)

4. वेल कम टू सज्जनपुर (2008)
5. क्वींस डेस्टिनी ऑफ डांस (2011)
6. चंडीगढ़ करें आशिकी (2019)
7. लक्ष्मी बॉम्ब (2020)
8. हड्डी (2023)
9. Links-
 1. <https://youtu.be/7NwxKELYguU?si=-6ngB5ZxuKfp95X9>
 2. <https://youtu.be/2HVJ-AKDbiA?si=3ZS1Bzm6G1qhvpWU>
 3. https://youtu.be/F_b6vJ0X67Y?si=ZSPk0grn1jhDPXhs
https://youtu.be/F_b6vJ0X67Y?si=uC96nLY4U8XkFFz
 4. <https://youtu.be/IeSbSGWJxEQ?si=hBKq74JAR6cLfuXA>
 5. https://youtu.be/OSyPX_SbdTo?si=893MGPbLDS_b-zZS
 6. <https://youtu.be/STAPL5pMgPE?si=yjSoI5cYd5QC6vw9>